24 साल में फैसला

1993 के मुंबई बम धमाके मामले में टाडा कोर्ट ने अबू सलेम और मुस्तफा डोसा सहित छह आरोपियों को दोषी करार दिया। यह आरोपियों का दूसरा बैच है, जिस पर इस मामले में फैसला सुनाया गया है। इससे पहले 123 आरोपियों का मुख्य मुकदमा 2006 में पूरा हो चुका है, जिसमें 100 आरोपी दोषी करार दिए ÷ए थे। अब इस मामले में कोई आरोपी हिरासत में नहीं है, इसलिए तात्कालिक तौर पर माना जा सकता है कि यह इस मामले का अंतिम फैसला है। लेकिन दाऊद इब्राहिम, अनीस इब्राहिम, मोहम्मद डोसा और टाइ÷र मेमन सहित 33 आरोपी आज भी फरार हैं। ये वही लोग हैं जिन्हें इस मामले का मुख्य कर्ता-धर्ता कहा जा सकता है। जब तक ये कानून के फंदे से बाहर हैं तब तक यह नहीं माना जा सकता कि यह मामला अपनी तार्किक परिणति तक पहुंच गया है। 1993 का मुंबई सीरियल ब्लास्ट देश में अपनी तरह का पहला बड़ा आतंकी हमला था। इसने पूरे देश को हिला कर रख दिया था। तब दुनिया के अन्य किसी भी देश में आतंकवाद अपने मौजूदा स्वरूप में सामने नहीं आया था। करीब आठ साल बाद 2001 में अमेरिका में हुए 9/11 हमले की तुलना 1993 के मुंबई हमले से की जा सकती है। अमेरिका उस हमले से कुछ वैसा ही विचलित हुआ, जैसा तब भारत हुआ था। मगर दोनों देशों की प्रतिक्रिया में अंतर साफ देखा जा सकता है। अमेरिका ने बौखलाहट में कौन-कौन से कदम उठाए और वे कितने सही या गलत थे, इस तरह के सवालों को फिलहाल छोड़ दें तो इतना साफ है कि आतंकी हमले के दोषियों को सजा देने में अमेरिकी हुकूमत काफी तत्पर रही। आखिर ओबामा के कार्यकाल में ओसामा बिन लादेन को भी मौत के घाट उतार दिया गया। इसके उलट भारत में कभी इस तरह की बेचैनी नहीं दिखी। न तो तत्कालीन नरसिंह राव सरकार के कार्यकाल में, न ही बाद की सरकारों में इस बात को लेकर कोई संकल्प दिखा कि सभी दोषियों के गिरेबान तक कानून का हाथ पहुंचे और वे सजा पाते हुए दिखें। इसी का नतीजा था कि इस कत्लेआम को अंजाम देने वाले बड़े अपराधी कभी भी भागते हुए, बचते हुए, परेशान होते हुए नहीं दिखे। वे अपने-अपने ठिकानों पर कारोबार करते, क्रिकेट मैच देखते नजर आए, जबकि मुंबई एक के बाद एक हमले झेलती रही। कभी ट्रेन में ब्लास्ट तो कभी किसी बाजार में। फिर 2008 के 26/11 हमले में सड़कों पर नाचती मौत भी इस बहादुर शहर के हिस्से आई। सरकारों के दावे आते रहे, पर इन 24 सालों में उस नेटवर्क को भी नेस्तनाबूद नहीं किया जा सका, जो आज भी दुबई और कराची से सक्रिय है और कभी नकली नोट तो कभी किसी और संदर्भ में जिसका जिक्र होता रहता है। हमारे राष्ट्रीय चरित्र पर इससे दुखद टिप्पणी और क्या हो सकती है।

पानी की बर्बादी से हुआ बदहाल

कभी उत्तर प्रदेश का हरियाणा सीमा से पूर्व की ओर बढ़िए तो आपको लगेगा जैसे-जैसे हम पूर्व की ओर चलते हैं, धरती उतनी ही अनुदार होती जाती है। ऐसा क्यों है, इसका जवाब किसी के पास नहीं है। जहां पश्चिम में पग-पग पानी डग-डग धानी है वहीं पूर्व में इन दिनों दूर-दूर तक हरियाली के दर्शन नहीं होते। दिल्ली से वाराणसी तक की अपनी यात्रा में मुझे कानपुर के बाद खेत सूखे दिखे जबकि इतनी ही गर्मी मेरठ और सहारनपुर तथा मुरादाबाद मंडल में भी है लेकिन वहां कहीं भी ऐसा नहीं लगा कि यहां के किसान को अपनी कृषि से अरुचि है।

सुदूर अमृतसर से लेकर पूरा पंजाब, हरियाणा और वेस्ट यूपी में किसान का कैरेक्टर अलग है। इस क्षेत्र में खेती की जमीन अलग दिखती है पर आगरा, इटावा और कानपुर के बाद आप जैसे ही फतेहपुर, इलाहाबाद और वाराणसी, चंदौली एवं मिर्जापुर की तरफ बढ़ते हैं वहां जमीन में हरियाली कम, सूखा ज्यादा रहता है। हालांकि यहां भी नदियां हैं, झीलें हैं। पोखर हैं। लेकिन नहीं है तो बस कृषि। दरअसल असली बात यह है कि अंग्रेजों के समय से सरकारों ने यहां की नदियों के पानी को नियंत्रित नहीं किया। पानी बरसा, नदियां उफनाईं और पानी बह गया। असली समस्या यह है कि चूंकि उत्तर भारत में नदियों का बहाव पूर्व की तरफ है, इसलिए जैसे-जैसे वे पूर्व की तरफ बढ़ेंगी, उनकी बहाव की गति तीव्र होती जाएगी। ऐसे में अगर बांधों, नहरों आदि से नदियों के पानी का संकुचन नहीं किया गया तो सारा पानी निरर्थक बह जाएगा। ऐसा शायद यहां की धरती के ढाल की वजह से होता है। गंगा और यमुना भी क्रमशः अलीगढ़ और आगरा से आगे बढ़ते ही जमीन को काटना शुरू कर देती हैं। साथ ही इनकी सहायक नदियों का पानी भी इनकी तीव्रता और कटाव को तेज करता है। एटा के करीब अलीगंज के कछार गंगा के ये कटाव तीव्रता को बताते हैं तो आगरा से आगे बढ़ते ही यमुना अपना विकराल रूप ले लेती है। यही वजह है कि इटावा से कालपी के बीच यमुना के दोनों किनारों में तीन-तीन कि.मी. का इलाका बियाबान है। न पानी, न हरियाली, न जमीन में नमी। जमीन उपजाऊ नहीं है और बेहद गरीबी भी है। और यही वजह है कि यहां का क्राइम ग्राफ ऊपर ही रहता है। मालूम हो कि यही वह इलाका है जहां की दस्यु समस्या से पूरा प्रदेश करीब 70 वर्षों तक जकड़ा रहा। दस्यु मानसिंह से लेकर निर्भय गूजर तक पूरा इटावा और जालौन समेत करीब 200 मील का क्षेत्र ग्रसित रहा था। आज भी पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता कि यह क्षेत्र अब दस्यु मुक्त है। ऐसा ही हाल गंगा किनारे अलीगंज का रहा। दस्यु छविराम को लोग भूले नहीं हैं। सरकार का ध्यान क्राइम कंट्रोल पर तो रहा लेकिन उसके मूल को समझने की कोशिश कभी नहीं की। अगर यहां पर नहरों और बांधों के जरिये फालतू बह जाने वाले पानी को बांधने की कोशिश की जाती तो यहां का किसान खुशहाल होता और वैसी गरीबी न होती, जिस वजह से किसानों को बड़े जमीदारों और महाजनों की कुटिल नीतियों में नहीं फंसना पड़ता। कर्ज और सूखे के दुश्चक्र में उलझा किसान या तो खुदकुशी करता है अथवा बन्दूक लेकर इन नदियों के बीहड़ में कूद जाता रहा है। आज भी सरकार बीहड़ को समतल करने के प्रयास तो करती है मगर पानी को नियंत्रित करने के प्रयास नहीं करती। पंजाब, हरियाणा और वेस्ट यूपी की हरियाली का राज यहां की नहरें, डैम और बिजली घर हैं। पर यूपी के पूर्वी इलाके में नहरें नहीं हैं। सूखी जमीन को हरी-भरी बनाने के लिए जरूरी है कि पानी को अपने कंट्रोल में लो। बहते पानी को रोका नहीं जा सकता। मगर इस पानी को नहरों के जरिए फालतू बह जाने से तो रोका जा ही सकता है। सरकार को चाहिए कि यहां भी वेस्ट की तरह नहरें बिछाए। पानी मिलेगा तो जमीन उपजाऊ हो जाएगी और जमीन उपजाऊ हो जाएगी तो किसान खुशहाल होगा। जिनके पास कृषि की जमीन नहीं है, उनको रोजगार मिलेगा और अच्छी मजदूरी मिलेगी। अगर सरकार ऐसा ठान ले तो कोई शक नहीं कि यह इलाका भी वेस्ट की तरह बेस्ट न हो जाए। पानी, बिजली और सड़क के साथ-साथ सरकार को इनका नियमन बहुत जरूरी है। सरकार अगर कल्पनाशील और तेज-तर्रार अफसरों को ऐसे कार्यों के लिए नियुक्त करे तो हर हाल में चीजें नियंत्रित होने लगेंगी और वह इलाका जो सूखे की वजह से जाना जाता है, हरी-भरी खेती और खुशहाल किसानों के लिए जाना जाएगा। यूपी के इस पूर्वी इलाके का स्वास्थ्य सुधारने के लिए सरकार को पूरी सर्जरी करनी होगी। तब ही यह इलाका समृद्ध होगा।

महात्मा की साख गिराने का खेल

मेरे प्रिय सरदार मुझे पता चला है कि आपके अहमदाबाद के लड़के मुझे अब 'चतुर बनिया' के तौर पर पेश कर रहे हैं। जमनालाल (बजाज) को इस बात का ठीक से पता है कि मैं मूर्ख बनिया ही रहा होऊंगा क्योंकि कभी मैंने कोई खाता नहीं रखा। पहले मैंने सोचा कि मैं जवाहरलाल (नेहरू) को लिखूं। पर फिर सोचा कि जवाहरलाल को तो इन लड़कों ने पहले ही हलकान किया हुआ है। लगता है कि वे किताबों और इतिहास को फिर से लिखने पर आमादा हैं ताकि आपका नाम लोगों की यादों से सदा के लिए मिटाया जा सके। ये लोग जवाहरलाल के बारे में कहानियां फैलाने के लिए ऐसे मंच का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिसे सोशल मीडिया कहते हैं। क्या वाहियात बात है। लगता है कि अब मेरी बारी है। वे इस राष्ट्र की कल्पना में मुझे एक-दो पैग पिये हुए पेश करना चाहते हैं और एक बनिये के तौर पर मुझे पेश करना चाहते हैं ताकि ये कांग्रेस पार्टी को निगल जाएं। सरदार, इनके खिलाफ मत बोलना। ये सब आपके चेले चपाटे हैं। कम से कम वे ऐसे नगाड़े तो बजा ही रहे हैं कि मैंने आपके सामने जवाहरलाल को खड़ा किया और मैंने उन्हें भारत का प्रधानमंत्री बनाने के लिए आपके साथ दगा की। पता चला है कि वे आपके सम्मान में चीन में बनी हुई एक बड़ी प्रतिमा लगाने की तैयारी कर रहे हैं। उन्हें लगता है कि ऊंची प्रतिमा लगाने से ही आपका कद ऊंचा होगा। मैंने अपनी इस बात पर पछतावा नहीं किया है कि वे इस भारत का क्या कर रहे हैं। क्योंकि मुझे पता है कि उन्हें हर साल राजघाट आना ही होगा। वे तो चरखा कातने की नौटंकी भी करेंगे। और जब उनकी जरूरत पड़ेगी तो वे मेरी तरह उपवास रखने का ढोंग भी करेंगे। लेकिन ये 'चतुर बनिया' वाली बात संजीदा है। कोई मुझे गाली दे, मुझे फर्क नहीं पड़ता। नाथूराम गोडसे ने जब अपनी पिस्तौल बिड़ला हाउस में मेरी ओर तान दी थी तो उससे पहले भी मुझे खूब गालियां दी गईं। मुझे कइयों की गालियां सुनने का अवसर मिला। टोरीज़ ने, कम्युनिस्टों ने मुझे कोसा। और तो और अम्बेडकर ने भी मुझे नहीं बख्शा। लेकिन उन सबने मेरे विचारों से जिरह की थी, मेरे कदमों और कार्यक्रमों पर सवाल उठाए थे पर किसी ने मुझे बनिया कहकर नहीं बुलाया, चतुर बनिया तो दूर की बात रही। सरदार, मेहरबानी करके यह बताना कि मैंने आपके चेलों का क्या बिगाड़ा है जो वे इस तरह के नाम से मुझे बुला रहे हैं मैं कोई भोंदू तो हूं नहीं कि मैं यह न समझ सकूं कि उनकी असल मंशा क्या है। अगर सच सुनना है तो बता दूं कि वे उन सब विचारों, विचारधाराओं और व्यक्तियों को हाशिये पर धकेल देना चाहते हैं जो स्वतंत्रता संग्राम, राष्ट्रवादी आंदोलन और भारत को आधुनिक राष्ट्र में तबदील करने की प्रक्रिया से जुड़े थे। उन्होंने मेरी इस इच्छा को जानबूझकर चुन लिया कि कांग्रेस को एक लोक सेवा संघ में तबदील कर देना चाहिए। मेरे इस विचार के साथ गलतफहमी हुई है। और आपके ये सरल दिमाग वाले चेले क्या कर रहे हैं, मुझे और आपको यह ठीक से पता है कि अंग्रेजों के जाने के बाद कांग्रेसियों को रिटायर होकर जंगल तो नहीं चले जाना था जहां वे साधना करते और ईश्वर भजन करते या गौशाला चलाते और सारा राजनीतिक मोर्चा हिंदू महासभाइयों या कम्युनिस्टों के हवाले कर देते। कां÷ेसी इतने अव्यावहारिक तो नहीं थे कि सारा मैदान उन लोगों के लिए छोड़ देते जो आजादी की लड़ाई के खिलाफ थे और अंग्रेजी हुकूमत का साथ देते आ रहे थे। आपको पता है कि जवाहरलाल ने इस सवाल पर सेवाग्राम में अपनी बेबाक राय जाहिर की थी, मुझे कत्ल किए जाने से महज छह सप्ताह पहले। आप वहां नहीं थे लेकिन लगभग सभी गांधीवादी वहां थे। राजेन बाबू, मौलाना, विनोबा, कृपलानी, जयप्रकाश-सबके मन में यही सवाल था-'गांधी तो गए, अब हमें कौन रास्ता दिखाएगा' जवाहरलाल ने इस लोक सेवा संघ के सवाल पर उस समय राय जाहिर की थी। 'बापू ने लोक सेवा संघ की योजना बनायी थी। यह सही है। लेकिन बापू ने किसी राजनीतिक संस्था की कल्पना नहीं की थी। इसका फल यह था कि कांग्रेस को भंग कर दिया जाए और उसके स्थान पर ऐसी संस्था बनायी जाए जो राजनीतिक न हो। ऐसे में एक नई राजनीतिक संस्था भी पैदा करनी होगी क्योंकि राजनीतिक कार्य तो अभी बकाया है। अगर कांग्रेस राजनीतिक मैदान से हटती है तो उसके स्थान पर एक नए नाम से राजनीतिक संस्था बनानी होगी। राजनीतिक जीवन पर तो विराम नहीं लगाया जा सकता। अभी तक कांग्रेस की भूमिका ब्रिटिश हुकूमत से लड़ने की थी लेकिन अब उसकी भूमिका पूर्ण हो गई है। उसे अब सरकार का विरोध नहीं करना है बल्कि सरकार चलानी है। यह कार्य अब नए तरीके से राजनीति में रहते हुए किया जाएगा।' सरदार, आपके चेले बातों को तोड़ने-मरोड़ने में बेहद माहिर हैं। उनकी मंशा यह दिखाने की है कि सत्ता की भूखी कांग्रेस ने लोक सेवा संघ के मेरे विचार का अनादर किया। यह एकदम फर्जी बात है। संगठन, नियत्रंण, व्यवस्था और सत्ता के बारे में मुझे कुछ जानकारी है और मैं ख्वाब में भी नहीं सोच सकता कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसे एक मजबूत संगठन को भारतीय राजनीति की ऊंचाइयों से नीचे लाया जा सकता था और सारा मैदान सावरकरियों और महासभाइयों के लिए छोड़ दिया जाता। सरदार, आपके चेले अपने आप में इतने गुमान वाले हैं कि मुझे एक अमेरिकी अभिव्यक्ति याद हो आई है। सरदार, बीते वर्षों में एक शानदार बात यह गढ़ दी गई है कि जवाहरलाल सुभाष (बोस) से खौफ खाते थे। ये लोग भूल जाते हैं कि सुभाष ने जवाहर से ही नहीं बल्कि पूरी कांग्रेस से इतर रास्ता चुन लिया था। तुमसे और मुझसे भी अलग। जब से आपके चेले सत्ता में आए हैं, तब से वे तथाकथित बोस फाइलों को सार्वजनिक कर रहे हैं। क्या किसी के यह हाथ लगा कि सुभाष या उनकी यादों के साथ नाइंसाफी हुई थी इतिहास से अपनी मर्जी की घटनाएं चुनकर राष्ट्रीय नेताओं को बदनाम करना और लोगों के दिमाग में जहर भरने से कोई राष्ट्रीय प्रगति नहीं होने वाली। आपके चेलों की विचारधारा क्या है क्या इस विचारधारा ने पिछली सदी में यूरोप में तबाही नहीं मचायी थी इस साफ विचारधारा का नतीजा क्या हुआ-हम और आप, दोस्त और दुश्मन, समर्थक और विरोधी, देशभक्त और देशद्रोही में लोगों को बांट दिया गया। नतीजा हुआ हिंसा में। पूर्ण नियंत्रणवादी का जर्मनी में क्या नतीजा हुआ। उस मसखरी मूंछों वाले शख्स ने किया था यह सब। सरदार, मुझे अफसोस है कि मैं इतना सब बोल गया लेकिन आपको इस्तेमाल करते हुए ये लोग जवाहरलाल, पर अब मुझ पर तंज कसते रहते हैं। देखना किसी दिन ये आपको पाटीदार तक सीमित कर देंगे। आपके चेले नोट और वोट गिनने में माहिर हैं। लेकिन मैं भारतीय राजनीतिक जीवन में घोली जा रही इस संस्थागत विद्रूपता को देखकर चुप नहीं लगा सकता।

कर्जखोरों पर शिकंजा

खबर सुकून देने वाली है कि अब मेहनतकशों का हिस्सा हड़पने वाली बड़ी मछलियां नियम-कानूनों के जाल में फंसेगी। मुश्किल दौर में गैर निष्पादित संपत्तियों के बोझ तले चरमराते सार्वजनिक बैंकों को राहत मिल सकती है जब केंद्रीय बैंक की पहल पर बारह बड़े बकायादारों पर शिकंजा कसेगा। उम्मीद जतायी जा रही है कि बारह ऐसी बड़ी कंपनियों को चिन्हित किया गया है, जिन पर बैंकों का करीब दो लाख करोड़ रुपया बकाया है। जो कुल एनपीए का एक-चौथाई है। यह एक अच्छी शुरुआत है। इससे भारतीय बैंकिंग व्यवस्था के प्रति व्याप्त उस धारणा को निर्मूल किया जा सकेगा कि बड़े बकायादारों को मजा और छोटे बकायादारों को सजा मिलती है। कभी किसी हजार-करोड़ के बकायादार के खिलाफ बैंक नोटिस चस्पा नहीं हुआ, जबकि किसान की ट्रेक्टर-ट्राली से लेकर आम आदमी की कार तक बैंक उठा ले जाते हैं। शीर्ष न्यायालय भी बड़े बकाया दारों के नाम सार्वजनिक करने की बात कह चुका था मगर पहले शीर्ष बैंक के कर्ताधर्ता बैंक की गोपनीयता सार्वजनिक न करने की दुहाई देकर चुप्पी साध रहेथे। इस दिशा में कुछ साहस मोदी सरकार ने भी दिखाया और वित्त मंत्री ने सक्रियता। सरकार ने ऐसे मामले निपटाने के लिये हाल ही में बैंकिंग नियमन कानून 1949 में संशोधन करके रिजर्व बैंक को और ज्यादा अधिकार दिये थे। जिसके चलते शीर्ष बैंक डिफॉल्टरों को दिवालिया घोषित करके कानूनी कार्रवाई कर सकता है। बहरहाल, इस कोशिश से अपने कर्ज वापसी के लिये जूझ रहे बैंकों में राहत की उम्मीद जगी है। लगातार बढ़ते बट्टेखाते से नये गण देने में मुश्किलों का सामना कर रहे बैंक कुछ सुकून जरूर महसूस करेंगे। अब बड़े डिफॉल्टरों पर इन्साल्वेंसी एंड बैंकरप्शी कोड-2016 यानी आईबीसी के तहत कार्रवाई होगी। इसके तहत बैंकों को राष्ट्रीय कंपनी विधि न्यायाधिकरण यानी एनसीएलटी के पास जाना होगा। हालांकि यह वसूली इतनी आसान भी नहीं है। इसके बाद एनसीएलटी छह महीने में कर्ज अदायगी का खाका तैयार करने की अनुमति देगा। यदि इस अवधि में कार्य पूरा न हुआ तो नौ महीने बाद कंपनी व उसकी हिस्सेदारी को बेचकर वसूली की जायेगी। हालांकि हमारे सामने माल्या प्रकरण है, जिसमें अभी तक बकाया नौ हजार करोड़ रुपये की वसूली नहीं हो पाई है। जाहिरा तौर पर डिफॉल्टर बड़ी पहुंच वाले चतुर-चालाक लोग होंगे। कार्रवाई की प्रक्रिया के दौरान वे संपत्ति को ठिकाने लगाने के चोर रास्ते तलाशने से भी नहीं चूकेंगे। फिर तालाबंदी से निकाले गये लोगों के आंदोलन और कानून के छिद्रों को तलाशने का काम भी होगा। ऐसे में सरकार व शीर्ष बैंक के सख्त रवैये की आवश्यकता होगी। बहरहाल बड़े डिफॉल्टरों पर शिकंजा कसने और बदनामी के डर से आने वाले समय में बैंकों को चूना लगाने की प्रवृत्ति पर अंकुश जरूर लगेगा।

परवरिश के बाउंसर और बैकफुट पर जिंदगी

आज कुछ लिखना चाहती हूं। उंगलियां सच लिख देना चाहती हैं। दिमाग एक साथ कई सारे ट्रैक पर काम कर रहा है। मुझे क्रिकेट की बहुत समझ नहीं, लेकिन उसके शब्दों से हमेशा प्यार रहा है। कुछ रिटायर्ड लोग अपनी ज़िंदगी की सेकंड इनिंग को फ्रंट फुट पर खेलना चाहते हैं। फिर लगा कि ज़िंदगी हमेशा बैक फुट पर खेलते आए हैं। हम जिस समझ में पले-बढ़े हैं, उसमें लड़कियों को हमेशा डिफ़ेन्सिव होना सिखा दिया जाता है। लड़कपन से ही शृंगार को ग़लत कहा जाता गया। इसका असर अभी तक भी यूं है कि मैं सिर्फ़ शादी या फ़ंक्शन में लिपस्टिक लगाती हूं। दुनिया और समाज के अलावा भी घर के संस्कार होते हैं। परवरिश होती है। जैसे पढ़ना-लिखना, लोगों से बात करना, किसी भी जगह जाना या कि अपने पसंद का कॅरियर चुनना ही। बात ये है कि उम्र इतनी हो आयी। शादी के इतने साल हो आए। लिखते-पढ़ते हुए एक दशक बीत गया लेकिन अभी भी किसी पाठक या फ़ैन से बात करते हुए हमेशा इस बात का ध्यान रखना होता है कि वह लड़की है या लड़का। लड़कियों से बात करने के अलग सिटैक्स होते हैं और लड़कों से बात करने के अलग। कोई लड़की अ÷र कह जाए कि आपकी किताब पढ़ के आप से प्यार हो गया तो फिर भी ठीक है, लेकिन यही बात अगर किसी लड़के ने कह दी तो उसको उसी समय डांट फटकार लगानी ज़रूरी हो जाती है। आप किसी के प्रति अपने स्नेह को छिपाते हैं। अपना अनुराग प्रदर्शित करने से डरते हैं। जो एक लड़का बड़ी तमीज़ से हमेशा बातें करता है, जिसको हम थोड़ दुलार में कभी सर चढ़ना चाहते हैं। उसके शहर के बारे में, उस लड़की के बारे में जिसका ज़िक्र उसकी कविताओं में छिपा होता है। हम पूछना चाहते हैं कि वो कौन थी, जिसने तुम्हारा दिल इस तरह तोड़ कि तुम ऐसा मारक लिखते हो। लेकिन हम डरते हैं कि ज़्यादा पर्सनल ना हो जाएं। हमें इश्क़ को सम्हालना सीखना है। तुम अपनी पसंद के गाने भेजो, मैं अपनी पसंद की कविताएं। हम इसी तरह सीखते हैं। हम इसी तरह ज़िंदगी में अलग-अलग रंग भरते हैं। और हम, इस तरह, ज़िंदगीभर बैक फुट पर खेलते रहे। इश्क़ की बाउन्सर से आउट होते रहे। खैर अब खुद से इश्क़ कर रहे हैं थोड़ा-थोड़ा। इस बात से बेपरवाह कि किसी को हमसे इश्क़ हो जाएगा, मेरी बला से! बाल खोलकर घूम लेते हैं। गहरी गुलाबी लिपस्टिक लगा लेते हैं। ये मेरी ज़िंदगी है। अब जितनी बची है, अपने हिसाब से जिऊंगी। मैनेज कर लेंगे इश्क़ भी, आफ़त भी और लिखना भी।

मन की मलिनता

शिव-पार्वती मुक्त आकाश में विचरण कर रहे थे। नीचे पृथ्वी पर एक जगह कथा-प्रवचन कार्यक्रम चल रहा था। पार्वती महादेव से बोली-नाथ, देखिये पृथ्वी पर धर्म-ध्यान में भक्त कितना समय दे रहे हैं। क्या इन सभी को सद्गति मिल पाएगी शिवजी मुस्कुराते हुए बोले-पार्वती, यह दृश्य जो तुम देख रही हो, पूर्णतः सत्य नहीं है। यह लोग यहां बैठे अवश्य हैं, मगर इनका मन कही और है। तभी एक वन में हाथियों के झुण्ड को ताल में स्नान करते देख शिवजी पार्वती को नीचे ले आये और हाथियों के ताल से बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगे। स्नान करके बाहर आते हुए हाथी बाहर पड़ी धूल में सूंड मारकर, धूल अपने शरीर पर डाल रहे थे। यह देखकर पार्वती बोली-देखिये नाथ, इन हाथियों की मूर्खता। अभी स्नान करके आये हैं और बाहर आकर स्वयं को फिर से गंदा भी कर लिया। तब महादेव पार्वती को समझाते हुए बोले-मैं तुम्हें यही समझाने यहां लाया था। कथा सुन रहे भक्तों की स्थिति भी इन हाथियों जैसी ही है। खूब रस ले-लेकर प्रवचन सुनते हैं, मगर मंडप से बाहर आते ही उसी सांसारिकता की धूल से स्वयं के मन को मलिन कर लेते हैं।

राशिफल

मेष- आज आपको दिन से पहले हिस्से में दूसरों की आर्थिक मदद करने में ही अपना समय गुजारना पड़ सकता है। किसी दोस्त या रिश्तेदार को छोटा मोटा कर्ज दिया जा सकता है।

वृष- आज दिन की शुरुआत नौकरी से जुड़ी समस्याओं को हल करने से होगी। किसी कॉम्पिटिशन में आपकी जीत हो सकती है। प्यार के मामले में आज का दिन ठीक है।

मिथुन- आज आप दूसरों के इमोशंस को पहचानें और उनके अनुसार चलेंगे तो आपको काफी आत्मसंतोष होगा। कभी-कभी दूसरों की बात सुनने में कोई परहेज नहीं है।

कर्क- आज आपके पास खुद को साबित करने के कई मौके आएंगे। उन मौके को पहचानकर उन पर खरा उतरना आपकी जिम्मेदारी है।

सिंह- आज का दिन आपके लिए खुशियों से भरा रहेगा। किसी से वाद विवाद या बहसबाजी में आपकी जीत हो सकती है।

कन्या- आज आपके ऊपर ढेर सारी जिम्मेदारियां निभाने का दिन है। घर के सभी पुराने लटके हुए कामों को पूरा करने का मौका मिलेगा।

तुला- आज आप अपनी पुरानी देनदारी चुकाने में कामयाब हो जाएंगे। कुछ जरूरी सामान की शापिंग करनी पड़ सकती है। अपनी जेब का खास ख्याल रखें।

वृश्चिक- आज का दिन आपको बहुत बिजी रखेगा। दिन के पहले हिस्से में कुछ जरूरी फोन कॉल्स और ईमेल्स का जवाब देना जरूरी होगा।

धनु- आज आपको ऑफिस में कुछ नए अधिकार दिये जा सकते हैं। किसी क्रियेटिव काम में भी आपकी रुचि बढ़ेगी। जरूरी सामान की खरीदारी में शाम का समय बीतेगा।

मकर- आज सुबह से ही किसी नये प्रोग्राम को लेकर आपके अंदर नई शक्ति और एनर्जी रहेगी। दिल की बात जुबान पर लाने का यह सबसे अच्छा समय है।

कुंभ- आज दिन के पहले हिस्से में आपको छुटपुट धन का लाभ होने की संभावना है। कोई भी नौकरी शुरुआत में छोटी या बड़ी नहीं होती।

मीन- आज आप अपने में मस्त रहेंगे। किसी भी विरोधी की आलोचना की तरफ बिल्कुल ध्यान न लगाएं। अपना काम करते रहें।

शब्द सामर्थ्य

बाएं से दाएं
1. अभिमान, घमंड, अनुमान 4. बादल, मेघ, जलद (सं) 6. अधिकार वाला, अधिकारी 8. गति, सामंजस्य, समा जाना 10. कारावास, जेल 11. जोर, शक्ति, जान, सांस 12. राजाओं के रहने का भवन 15. मालामाल, अमीर, धनवान 18. नाव खेने का यंत्र 20. 'खन' ध्वनि उत्पन्न होना, पायल आदि का शब्द करना 21. मार डाला हुआ, घायल किया हुआ 22. हमेशा, आवाज 23. आग की लपट, ज्वाला 24. झगड़ा, तकरार 25. हीरा।

ऊपर से नीचे
1. दोषी, अपराधी 3. ताश में नौ अंक वाला पत्ता 4. झंडा, पताका 5. गहरा कीचड़, पंक 7. बूंद, अंश 9. मृत्यु के देवता 13. संसार, दुनिया, जग 14. हुजूर, जनाब, सम्मान सूचक एक शब्द (उ.) 16. सच्चा, धर्मनिष्ठ, ईमानवाला 17. अनूठा, बांका, अनुपम, छैला 18. आश्रय, शरण 19. साधुवाद, प्रशंसा 20. पटवारी की ऐसी बही जिसमें खेत संबंधी अनेक बातें लिखी जाती है, एक प्रकार का दानेदार संक्रामक रोग 23. गम, मातम, दुख।

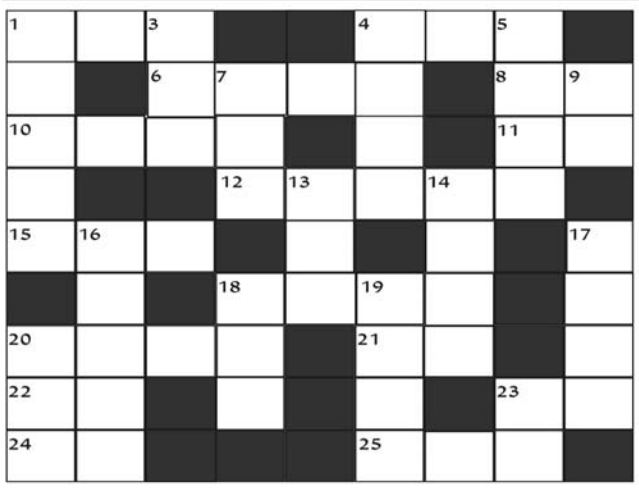

पिछले अंक का हल

स्मृ	ति	■	पा	व	क	■	बे	ल
■	र	ज	नी	च	र	■	■	ट्टू
मु	स्का	न	■	न	म	की	न	■
सा	र	■	स	■	■	ट	ख	ना
फि	■	अ	जा	य	ब	■	रा	जा
र	च	ना	■	था	ल	■	■	य
■	■	धि	■	र्थ	■	स	मा	ज
उ	प	कृ	त	■	आ	वा	ज	■
ल्लू	■	त	■	■	ब	ल	रा	म

सू-दोकू

सू- दोकू क्र.085(Rns)

		3					7	
9				6		3		8
	7		9		5		6	
						1		9
3		8		7			5	
	1		3		9			7
		2		8		7		
	8				2		4	3
			1					

नियम
1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गों का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.84 का हल

5	2	4	9	6	7	8	1	3
3	6	7	4	1	8	2	9	5
8	1	9	3	2	5	4	6	7
6	3	5	1	9	4	7	2	8
7	9	8	5	3	2	6	4	1
2	4	1	7	8	6	5	3	9
4	5	3	6	7	9	1	8	2
9	8	6	2	5	1	3	7	4
1	7	2	8	4	3	9	5	6